सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम
(माध्यमिक)

लक्ष्य

मानव समाज का अध्ययन जटिल है। इसमें सामाजिक संबंधों के ढांचे और संजाल का अध्ययन किया जाता है। समाज को जानने समझने के लिए अनेक विषयों की सूचना की जरूरत होती है। इसलिए सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए इतिहास, नागरिक शास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र और मानवशास्त्र की चीजें शामिल की हैं।

सामजिक विज्ञान छात्रों को समाज के ऐतिहासिक, सामाजिक–सांस्कतिक और आर्थिक पहलुओं का ज्ञान और समझ हासिल करने में सक्षम बनाना चाहता है। यह उन्हें महत्वपूर्ण मूल्य ग्रहण करने और एक जवाबदेह नागरिक के रूप में विकसित होने में मदद करता है। यह राष्ट्र के निर्माण और विकास की प्रक्रिया में हिस्सा लेने तथा योगदान करने के लिए छात्रों को प्रेरित करता है।

उद्देश्य

पाठ्यक्रम का उद्देश्य हैः

- धारावाहिकता, परिवर्तन और विकास की उस प्रक्रिया की समझ बढ़ाना जिससे मानव समाजों का क्रम विकास हुआ है;
- राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों और नीतियों के बुनियादी खाके को ध्यान में रखते हुए व्यापक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समकालीन भारत की समझ विकसित करना;
- भारत के स्वतंत्रता संग्राम की मुख्य बातों की जानकारी और उसके मूल्यों तथा आदर्शों की समझ बढ़ाना;
- भारत की प्राकतिक और सांस्कतिक विरासत की समद्वि और विविधता से परिचित कराना तथा उनके संरक्षण पर जोर देना;
- भारतीय संविधान में दर्ज मूल्यों को आत्मसात करने में पाठकों की मदद करना और एक लोकतांत्रिक समाज में एक सजग नागरिक की तरह अपने अधिकारों और कर्तव्यों के निर्वाह के लिए उन्हें तैयार करना;
- देश की नागरिक और राजनीतिक संस्थाओं की सरंचना ओर कार्य प्रणाली के बारे में छात्रों की समझ विकसित करना;
- भौगोलिक परिस्थितियों और परिदश्य के बारे में अन्तःदष्टि विकसित करना और उनके संरक्षण, उचित देख–रेख और गुणवत्ता में सुधार की जरूरत पर जोर देना।
- छात्रों को अपने प्राकतिक एवं मानव संसाधनों से तथा उनके सुव्यवस्थित एवं टिकाऊ विकास के तरीकों से अवगत कराना;
- व्यापक विश्व परिप्रेक्ष्य में समकालीन भारत के मुद्दों और चुनौतियों की जानकारी विकसित कराना;

- अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर भारत की भूमिका की समझ बढ़ाना।

1. माड्यूल : मानव समाज का क्रम विकास (17 अंक)

प्रस्तावनाः इस माड्यूल का उद्देश्य पाठकों को मानव समाज के क्रम विकास की सरसरी जानकारी देना है। यह पाठकों को उन विभिन्न चरणो की जानकारी देता है जिससे गुजर कर मानव समाज मौजूदा दौर में पहुंचा है। यह सामाजिक क्रम विकास और प्रगति मे सामूहिक मानव प्रयास को मुख्य शक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है। इस माड्यूल में छात्रों को समकालीन युग के प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों के रूबरू कराया गया है।

इकाई I : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

(क) प्रागैतिहासिक समाज; प्राचीन सभ्यताएं – कांस्य युग, लौह युग

(ख) मध्यकालीन विश्व–धार्मिक और सांस्कतिक विकास तथा सामंती व्यवस्था की मुख्य विशेषताएं।

(ग) आधुनिक काल की शुरूआत–आधुनिक विज्ञान का उदय, औद्योगिक क्रांति, अमेरिकी, फ्रांसीसी और रूसी क्रांति, लोकतंत्र के लिए आंदोलन, एशिया और अफ्रीका का उपनिवेशीकरण

(घ) पहला विश्व युद्ध, लीग ऑफ नेशन्स, फासीवाद और नाजीवाद का उदय, दूसरा विश्व युद्ध

इकाई II : समकालीन विश्व

(क) संयुक्त राष्ट्र : उद्देश्य एवं कार्य, प्रमुख अंग; नए आजाद देशों का उदय, तीसरी दुनिया के देशों में शांति और विकास, शीत युद्ध और गह युद्ध।

(ख) विश्व व्यवस्था के मुद्दे (1945से) : शीत युद्ध और प्रभाव क्षेत्र, सोवियत संघ का विघटन।

(ग) उभरता वैश्विक गांव : सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का प्रादुर्भाव, राष्ट्रीय सरहदों से व्यक्तियों, विचारों, मालों और मुद्राओं का बढ़ता प्रवाह।

2. माड्यूल : भारत : प्राकतिक परिवेश, संसाधन और विकास (15 अंक)

प्रस्तावना : यह माड्यूल छात्रों को परिवेश, संसाधनों और विकास के बीच के अंतर्सबंधों से अवगत कराती है। यह उन्हें परिवेश के बुनियादी तत्वों और उसकी गत्यात्मकता को समझने में सक्षम बनाता है। यह धरती पर पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखने की जरूरत को भी उजागर करती है ताकि समूचा जीवन जिसका कि मानव महज एक हिस्सा है, इस धरती पर टिका रहे और फलता–फूलता रहे।

यह माड्यूल छात्रों को प्राकतिक संसाधनों को उसकी समग्रता में और विकास को अनवरत आधार पर समझने में मदद करती है। इस माड्यूल में हम मुख्य रूप से विभिन्न प्राकतिक और मानव निर्मित संस्थानों, उनके वितरण, उपयोगिता और उसके संरक्षण तथा प्रबंधन की चर्चा करेंगे।

इकाई I : भारत : प्राकतिक परिवेश

(क) भारत : अवस्थिति; प्राकतिक परिवेश भूमि, जल, वायु, प्राकतिक पादप
(ख) भू–आकति : उभार एवं निकासी – देश में नदियों की भूमिका, नदियों का प्रदूषण एवं उसकी रोकथाम
(ग) जलवायु : जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक, मानसून – उसकी विशेषताएं, वर्षा का वितरण और तापमान; ऋतु चक्र; जलवायु एवं मानव जीवन; प्राकतिक पेड़ पौधें और वन्य जीवन

इकाई II : प्राकतिक संसाधन - उपयोग और सतत विकास

(क) भूमि एवं जल संसाधन – मदा निर्माण, प्रकार एवं वितरण
(ख) परिवर्तनशील भूमि – उपयोग के रुझान, भूमि क्षरण एवं संरक्षण के उपाय।
जल संसाधन – भूजल और सतह (नदी) जल, किल्लत, प्रदूषण, संरक्षण और प्रबंधन की आवश्यकता, जल संरक्षण
(ग) खनिज एवं ऊर्जा संसाधन : खनिज की किस्में, वितरण, खनिज के उपयोग और आर्थिक महत्व, संरक्षण
ऊर्जा संसाधन : ऊर्जा संसाधनों की किस्में – पारंपरिक एवं गैर – पारंपरिक, वितरण, उपयोग और संरक्षण
(घ) कषि : खेती की किस्में, प्रमुख फसलें, बदलता फसल अनुक्रम, प्रौद्योगिक और संस्थागत सुधार तथा उसका प्रभाव, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कषि का योगदान – रोजगार एवं उत्पादन, खाद्य सुरक्षा।
(ड.) उद्योग : प्रकार, भौगोलिक वितरण एवं बदलता अनुक्रम, राष्ट्रीय आय में उद्योग का योगदान।
(च) परिवहन एवं संचार
(छ) हमारी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण का प्रभाव

3. माड्यूल : भारत : लोग, समाज एवं संस्कति (12 अंक)

प्रस्तावना : यह माड्यूल जनसांख्यिकीय विशेषताओं, सांस्कतिक विविधताओं और एक संसाधन के रूप में जनसंख्या के महत्व को समझने में छात्रों की मदद करना चाहता है। सांस्कतिक पहलुओं में संस्कति का अर्थ, खासकर भारतीय संदर्भ में, सांस्कतिक विविधता और भौतिक परिदेश से उसका संबंध शामिल है। यह हमारी बहुसांस्कतिक विरासत की समद्धि और आने वाली पीढ़ियों के लिए उसे संरक्षण पर जोर देता है।

इकाई I : लोग और समाज

(क) लोग : जनसांख्यिकीय पहलू – एक संसाधन के रूप में जनसंख्या मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों स्तर पर, मानव क्षमता सर्वोत्तम बनाने की आवश्यकता, राष्ट्रीय जनसंख्या नीति।

(ख) सामाजिक ढांचा

इकाई II : हमारी सांस्कतिक एकता और विरासत

(क) संस्कति – संस्कति का अर्थ, संस्कतियों को प्रभावित करने वाले कारक, संस्कति के विभिन्न अवयव – परंपरा, सौंदर्यशास्त्र, कला, वास्तुशास्त्र, साहित्य, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, आस्थाएं एवं अनुष्ठान, धर्म, अनेकता में एकता।

(ख) भारत की सांस्कतिक विरासत : विरासत का संरक्षण : जरूरत और उनके संरक्षण के उपाय।

4. माड्यूल : भारत का मुक्ति संग्राम (15 अंक)

प्रस्तावना : यह माड्यूल पाठकों को भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास से परिचित कराएगा। यह भारतीय मुक्ति संग्राम के अनूठे सामाजिक–सांस्कतिक बुनियादों पर जोर देना चाहता है। देश के विभिन्न हिस्सों और तबकों ने आजादी के लिए जो बेमिसाल कुर्बानियां दी, यह उस पर केन्द्रित करना चाहता है। यह पाठकों को एक आमूल चूल परिवर्तित सामाजिक व्यवस्था की दष्टि से परिचित कराना चाहता है।

इकाई I : भारत में ब्रिटिश राज का प्रभाव और प्रतिरोध आंदोलन
इकाई II : धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन – सरोकार एवं उपलब्धियां
इकाई III : भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1855-1947)

5. माड्यूल : नागरिक, राज्य एवं संविधान (13 अंक)

प्रस्तावना : यह माड्यूल संविधान के दर्शन को उजागर करना चाहता है। यह अच्छे नागरिक और उनके अधिकारों – कर्तव्यों के महत्व को रेखांकित करने के लिए तैयार किया गया है। यह देखा गया है कि लोग ज्यादा से ज्यादा अधिकारों को लेकर चिंतित रहते हैं। इसलिए जोर मौलिक अधिकारों के साथ मौलिक कर्तव्यों और राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांतों पर दिया जाएगा। यह माड्यूल मानवाधिकारों और संबंधित संस्थाओं के महत्व को भी रेखांकित करता है।

इकाई I : हमारा संविधान

(क) संविधान का निर्माण

(ख) संविधान की प्रस्तावना और नागरिकता

इकाई II : नागरिक और नागरिकता

नागरिकता : अर्थ, अच्छे नागरिक के गुण, नागरिकता पाने और खोने के तरीके।

इकाई III : मौलिक अधिकार, कर्तव्य और राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत

(क) मौलिक अधिकार : अर्थ और महत्व, मौलिक अधिकारों के संदर्भ में संविधान के प्रावधान।
(ख) मौलिक कर्तव्य : अर्थ, अधिकार और कर्तव्य का संबंध, मौलिक कर्तव्यों के संदर्भ में संविधान में प्रावधान
(ग) राज्यनीति के निर्देशक सिद्धांत : राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत का अर्थ, राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत के संबंध में संविधान में प्रावधान और उसका महत्व।

इकाई IV : मानवाधिकार

(क) अर्थ एवं परिकल्पना
(ख) मानवधिकार का महत्व
(ग) राष्ट्रीय एवं राज्य मानवाधिकार आयोग

6. माड्यूल : क्रियाशील लोकतंत्र (15 अंक)

प्रस्तावना : यह माड्यूल छात्रों को भारतीय लोकतंत्र की क्रियाशील संस्थाओं से परिचित कराना चाहता है। यह विभिन्न स्तरों पर – स्थानीय, राज्य और केन्द्र सरकारों की संरचना और क्रियाकलापों का वर्णन करता है। स्थानीय स्तर पर तीन संस्थाएं – पंचायती राज, नगर निगम प्रशासन और जिला प्रशासन को शामिल किया गया है। उसके बाद राज्य और केन्द्र सरकारें हैं। यह छात्रों को लोकतंत्र के सफल संचालन में नागरिक की सक्रिय भागीदारी की जरूरत से भी अवगत कराता है।

इकाई I : स्थानीय सरकार और क्षेत्र प्रशासन

(क) पंचायती राज व्यवस्था

(ख) नगरपालिका प्रशासन

(ग) जिला प्रशासन

इकाई II : राज्य सरकार

(क) राज्यपाल, मुख्यमंत्री

(ख) मंत्रिमंडल

(ग) राज्य विधायिका, उच्च न्यायालय, राज्य सचिवालय

इकाई III : केन्द्र सरकार

(क) संसद, राष्ट्रपति
(ख) प्रधानमंत्री एवं मंत्रिमंडल
(ग) उच्चतम न्यायालय, केन्द्रीय सचिवालय

इकाई IV : लोकतांत्रिक प्रक्रिया में जन भागीदारी

(क) जनमत
(ख) राजनीतिक पार्टियां और दबाव समूह/हित समूह
(ग) चुनाव प्रक्रिया एवं सार्विक वयस्क मताधिकार

7. माड्यूल : समकालीन भारत : मुद्दे और चुनौतियां (13 अंक)

प्रस्तावना : आजादी के बाद भारत में प्रमुख उपलब्धियों के मद्देनजर यह यूनिट देश के समक्ष मौजूद कुछ राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों को चिह्नित करने की कोशिश करती है। इस माड्यूल का उद्देश्य राष्ट्र की महत्वपूर्ण समस्याओं के प्रति छात्रों को संवेदनशील बनाने और ईमानदारी से उसे हल करने पर जोर देना है।

इकाई I : राष्ट्र का निर्माण

(क) राष्ट्रीय एकता और धर्मनिरपेक्षता
(ख) सामाजिक और आर्थिक न्याय
(ग) महिलाओं को अधिकार संपन्न बनाना और समान अवसर देना
(घ) सब को शिक्षा, सबका स्वास्थ्य : देश का शिक्षा एवं स्वास्थ्य परिदश्य, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्रों में चुनौतियां, सरकार और गैर–सरकारी संगठनों के प्रयास।

इकाई II : पर्यावरण और उसका गुणात्मक सुधार :

पर्यावरण के अवयवः भूमि, जल, वायु, पेड़–पौधे और जीव–जंतु, पर्यावरण संबंधी मुद्दों के हल के प्रति समग्र दष्टि – स्थानीय से वैश्विक एवं विपरीत, पर्यावरणीय क्षरण, प्रदूषण, गुणात्मक सुधार के उपाय।

इकाई III : भारत और विश्व शांति :

भारत की विदेश नीति, राष्ट्र संघ में भारत की भूमिका; महाशक्ति के रूप में अमेरिका का उदय और दक्षिण एशिया, अफ्रीका और यूरोप में युद्ध।